www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-1* *January 2025***

साम्प्रदायिक तनाव एक सामाजिक समस्या

डॉ. भावना कमाने

सहायक प्राध्यापक, समाजषास्त्र, बाबू पढरीराव कृदत षासकीय महाविद्यालय सिलौटी, धमतरी, छ.ग.

वर्तमान समय में व्यक्ति एवं उसके अन्य पारिवारिक सदस्य व्यस्त भौतिकवादी जीवन में तनाव की जिंदगी जी रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह कि व्यक्ति तनाव में ही जन्म लेता है और तनाव में ही उसका अंत भी हो जाता है। मानव सभ्यता का इतिहास निरन्तर अग्रसर होने वाली एक गतिशील प्रक्रिया का भाग है। वह प्रकृति से संस्कृति (सभ्यता) की ओर अग्रसर हुआ, यही मानव सभ्यता की विशेषता है। संस्कृति एवं सभ्यता के निर्माण में अनेक सामाजिक इकाइयाँ संलग्न एवं कार्यरत रहती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि– ''व्यक्ति (परिवार) सभ्यता और संस्कृति की नींव है।''[1]

मानव एक समाज–प्रिय प्राणी है। समाज की संरचना अनेक परिवारों के एकत्र रहने एवं उनके परस्पर व्यवहार से होती है। प्रायः यह देखा गया है कि अनेक परिवारों के अनेक सदस्यों में कभी–कभी विचारों में मत–भिन्नता के कारण ही तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। यहीं पर परस्पर द्वेष, ईर्ष्या, प्रताड़ना झूठ–फरेब तथा षड़यंत्र आदि दुर्गुणों के कारण परिवार अथवा व्यक्तियों में तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है। कभी–कभी यह तनाव की स्थिति सम्पूर्ण मानव समुदाय के वातावरण में साम्प्रदायिकता की स्थिति उत्पन्न कर देता है। सामाजिक मान्यताओं के परिवर्तन की स्थिति का पूर्ववर्ती समाज पर गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। हमारे देश भारवर्ष में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् सामाजिक परिवर्तन अतिशीघ्र उभरकर हमारे सामने दृष्टिगोचर हुए हैं। तनाव को उत्पन्न करने में औद्योगिक विकास की महत्वपूर्ण भूमिका मानी गयी है। इस संदर्भ में आचार्य बालकृष्ण जी का कथन इस प्रकार है–

''तनाव का मस्तिष्क पर सीधा असर पड़ता है, क्योंकि मस्तिष्क में ही भावनाओं, विचारों, उत्तेजनाओं तथा स्वप्नों का सृजन होता है। मस्तिष्क को जब लगातार तथा क्षमता से अधिक कार्य करना पड़ता है तब मानसिक तनाव उत्पन्न होता है।''[2] आज व्यक्ति मानसिक तनाव के कारण सौन्दर्य का भी शत्रु है। तनाव के कारण दमकता हुए चेहरा धूमिल पड़ जाता है। सिर के बाल झड़ने लगते हैं। चेहरे पर झुरियाँ नजर आने लगती हैं। खिंचवा, खीझ और मायूसी तथा क्रोध के परिणाम स्वरूप चेहरे का आकर्षण सामप्त हो जाता है। नफरत के कारण हम अपने वक्तव्य को एकदूसरे तक सम्प्रेषित नहीं कर पाते हैं इसके कारण भीतर–ही–भीतर घुटन होने से मनोवैज्ञानिक बीमारी हो जाती है जो तनाव में वृद्धि करने में सहायक होती है। आज के युग में सूचना क्रांति के कारण ही अत्यधिक बोझ की स्थिति में व्यक्ति परेशान होकर तनाव ग्रस्त हो जाता है। आधुनिक युग व्यक्ति के लिए उच्च मानदण्डों वाला तथा वैभवशाली है, परन्तु यह केवल कहने भर के लिए ही है, यथार्थ में मानव जीवन इसके अनुरूप नहीं है। ''भौतिक सुख प्रदान करने वाली वस्तुएँ (उपकरण) समस्त मानव समाज के लिए आवश्यक उपभोग की वस्तुओं का स्थान ले चुकी हैं। इन सुख के साधनों को जुटाने में क्षमता से अधिक श्रम तनाव को जन्म देता है। प्रबुद्ध लोगों का मत है कि माया (धन–मुद्रा) बुराइयों की जड़ में है। मुद्रा के कारण ही अनेक प्रकार के तनाव उत्पन्न होते हैं जो मानव जीवन में परेशानी का कारण बनते हैं।''[3]

धन संग्रह की प्रवृत्ति व्यक्ति की आदत में रही है। भविष्य के लिए व्यक्ति हमेशा से संग्रह का कार्य करता

रहा है। परम्परागत प्राप्त सम्पत्ति से मानव को कभी भी सन्तुष्टि नहीं मिली है। मनुष्य आदिकाल से ही यह सोचता रहा है कि सम्पत्ति में वृद्धि करना आवश्यक है इसके मूल में पारिवारिक सदस्यों में वृद्धि होना भी रहा है। सम्पत्ति वृद्धि कार्य में उसने नैतिकता को तिलाज्जिल दे दी है। वह ऐसे भी कार्य करने लगा है, जिससे समाज का ढाँचा ही ध्वस्त हो गया है यहाँ तक कि वह पारिवारिक जनों की हत्या करने में भी किसी प्रकार का भय एवं संकोच नहीं कर रहा है। हमारे देश भारतवर्ष की संस्कृति में अनेक संस्कृतियाँ आकर समावेशित हो गयी हैं। अन्य संस्कृतियों के प्रवेश ने एक नयी समस्या पैदा कर दी है वह समस्या है साम्प्रदायिकता की। वैसे यदि देखा जाये तो साम्प्रदायिकता का मूल स्थान दो सम्प्रदायों के संघर्ष में ही स्थित होता है। जब दो सम्प्रदाय परस्पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में संलग्न हो जाते हैं, तब वहाँ पर संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। सम्प्रदायों का आपसी तनाव ही संघर्ष का स्वरूप धारण कर लेता है। हमारा देश हमेशा से संघर्ष का युद्ध करता आया है।

''सृष्टि के प्रारम्भ में ही देवताओं तथा राक्षसों में आपस में प्रभुता सम्पन्नता को लेकर संघर्ष पैदा हो गया था। देवता अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहते थे और राक्षस देवताओं से भी श्रेष्ठ बनने के संघर्ष में देवासुर संग्राम को उत्पन्न कर दिया था। इसमें देवताओं तथा राक्षसों दोनों का बराबर–बराबर दोष था। श्रेष्ठता की स्थिति ही साम्प्रदायिकता को जन्म देती है। जब देव समाज एवं राक्षस समाज की स्थिति यह थी जो मानव समुदाय से अधिक शक्तिशाली थे फिर मानव समाज की क्या बिसात?''[4]

भारतवर्ष ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर साम्प्रदायिकता का जहर अपने चरमोत्कर्ष पर है। कहीं धन के स्रोतों पर जबरन कब्जा करने को लेकर, तो कहीं जाति व्यवस्था, तो कहीं सीमा निर्धारण को लेकर तथा कहीं पर परमाणु की शक्ति पर एक दूसरे को नीचा दिखाने का मदारी जैसा खेल प्रारम्भ है। कितने अफसोस की बात है कि इसमें सर्वाधिक हानि मानव समुदाय की ही है, वह मानव समुदाय किसी भी सम्प्रदाय का हो सकता है। स्वतंत्रता के पश्चात् से भारत और पड़ोसी देश पाकिस्तान का संघर्ष 'शह और मात' के रूप में वैश्विक स्तर पर किसी से छिपा नहीं है। यही साम्प्रदायिकता की समस्या ही आतंकवाद की जननी है।

साम्प्रदायिकता को उत्पन्न करने में धर्म की भी सुदृढ़ तत्व के रूप में गणना की जाती है। धर्म के यथार्थ को ज्ञात करने के लिए हमें धर्म को दो भागों में विभक्त करना आवश्यक जान पड़ता है। धर्म का प्रथम रूप वह है जिसे भारतीय मनीषियों ने अपनी गहन अंतर्मुखी अनुभूति से व्यक्त किया है उसे 'परम धर्म' की संज्ञा प्रदान की गयी है। दूसरा धर्म वह है जिसे सामान्य मानव जन अपने सामाजिक जीवन में अर्थात् लौकिक जीवन में कर्मकाण्ड के रूप में प्रयोग करता है। इस धर्म को विद्रत् जन लौकिक धर्म कहते हैं। लौकिक धर्म अनेक प्रकारों में विभक्त है। ''लौकिक धर्म की संरचना व्यक्ति ने स्वयं के हितार्थ सुख एवं आनन्द प्राप्त करने के लिए की है। इस लौकिक धर्म की अपनी–अपनी मर्यादाएँ, कल्पनाएँ एवं अनिवार्यताएँ पृथक–पृथक स्वरूप में है यह धर्म स्वर्ग एवं नरक की प्राप्ति का साधन भी माना जाता है। इसकी स्वर्ग नर्क जीवन एवं मृत्यु सम्बन्धी अवधारणाएँ भी अन्य धर्मों से मेल नहीं खाती हैं।''[5]

लौकिक धर्म के विश्व में अनेक नाम बताये गये हैं। यथा–हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म, जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म आदि। इन धर्मों को यथार्थ में सम्प्रदायों की संज्ञा प्रदानकी गयी है अर्थात् ये धर्म न होकर मत अथवा सम्प्रदाय हैं। उपरोक्त धर्म के मानने वालों अर्थात् सम्प्रदायों में श्रेष्ठता को लेकर होड़ मची है। विशेषकर दो सम्प्रदायों हिन्दू एवं मुस्लिम में मचे धमासान संघर्ष ने आज आतंकवाद का स्वरूप ग्रहण कर लिया है।

मानव चेतना यथार्थता अखंड एवं शाश्वत है, परन्तु वह भ्रमवश विभाजित तथा कालबद्ध प्रतीत होती है। इसी विभाजित चेतना ने मानव को आन्तरिक रूप से अत्यधिक अशांत बना दिया है। बाहर से यह मानव शान्ति की कितनी ही बात कर ले, आनंद एवं सुख के संसाधन जुटा ले, परन्तु उसका मन अशांत ही बना रहेगा। अशांत एवं उद्वेलित मन वाला यह मानव शान्ति की खोज इन बाहर के भौतिक उपकरणों में करता है, इसीलिए वह भटक रहा है। उसका अंतस् निरन्तर ही विसंगतियों से भरता जा रहा है। ये विसंगतियाँ ही मानव में साम्प्रदायिकता के भाव को उत्पन्न करती हैं।

निष्कर्ष–

''मैं' और 'तुम' पर आस्था रखने वाली चेतना को साम्प्रदायिक ताकतों (आग्रहों) से बचाना अत्यंत जटिल कार्य है। साम्प्रदायिकता के मूल में अहंकार एवं स्वार्थ की प्रवृत्ति निहित होती है। अहं एवं स्वार्थ अपनी अभिवृद्धि के

लिए सदैव एवं निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। अहंकार का गुणगान ही उसकी प्रशस्ति का मार्ग है। अहंकार को सदैव प्रतिष्ठा एवं सम्मान चाहिए। साम्प्रदायिकता के साथ सहिष्णुता एवं उदारता का समन्वय असम्भव है। सत्ता और कानून के बल पर साम्प्रदायिकता को दीर्घकाल तक अंकुश में नहीं रखा जा सकता है। यही कारण है कि वर्तमान समय में आतंकवाद में कुछ हद तक गिरावट महसूस की जा रही है। आपसी मत भेदों को भुलाकर परस्पर मेल–जोल करके प्रेम एवं शान्ति से जीवन यापन करना ही मानव का परमधर्म है।

संदर्भ–

1. मलती जोशी के कथा साहित्य में पारिवारिक तनाव– डॉ. वीरश्री आर्य संस्करण 2012, पृ. 41, अभय प्रकाशन कानपुर।
2. विज्ञान की कसौटी पर योग–आचार्य बालकृष्ण, पृ. 137
3. मालती जोशी के कथा साहित्य में पारिवारिक तनाव, डॉ. वीर श्री आर्य, पृ. 63
4. सृष्टि की उत्पत्ति, डॉ. चेतन कुमार व्यास, संस्करण पृ. 57 समता प्रकाशन रुरा कानपुर देहात।
5. धर्म और साम्प्रदायिकता– नरेन्द्र मोहन, संस्करण 2006, पृ. 93, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।

Cite this Article-

डॉ0 भावना कमाने "साम्प्रदायिक तनाव एक सामाजिक समस्या", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:01, January 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i1004
Published Date- 07 January 2025